समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

शक्ति संवर्धन वर्ष

16 जनवरी 2019

वर्ष : 31, अंक : 14

प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 जनवरी 2019

वार्षिक चंदा : ₹ 60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-

प्रति अंक : ₹ 3/-

ई-मेल : news@awgp.org

news.shantikunj@gmail.com

RNI-NO.38653/ 80 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20

जीवन के उत्कर्ष की दिशा-प्रेरणा व अनेक जिज्ञासाओं का समाधान

प्रयागराज कुंभ-2019 विशेषांक

आस्था

ईश्वर का स्वरूप और उससे सम्बन्ध

भ्रम-भ्रांतियों से उबरें

ईश्वर-विश्वास मनुष्य जीवन की सार्थकता और सुव्यवस्था के लिए बहुत आवश्यक है। यों तो सामान्य नैतिक सिद्धान्तों पर आस्था रखते हुए भी मनुष्य नेक जीवन जी सकता है, अपने व्यक्तिगत उत्कर्ष और सामाजिक उन्नति में सफल योगदान दे सकता है, लेकिन ईश्वर-विश्वास के अभाव में वह कभी भी भटक सकता है। एक सर्वव्यापी सर्वसमर्थ न्यायकारी सत्ता के रूप में ईश्वर की मान्यता मनुष्य को अदर्शनिष्ठ, समाजनिष्ठ तथा विकासोन्मुख रखने में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

आस्तिकता को आज उपेक्षाणीय और निरर्थक इसलिए माना जाने लगा है कि ईश्वर के सम्बन्ध में बड़ी भ्रान्त मान्यताएँ फैला दी गई हैं। लोग यह समझने लगे हैं कि ईश्वर हम जैसा ही कोई निकृष्ट मनोभूमि वाला व्यक्ति है, जो थोड़ी-सी खुशामद से प्रसन्न हो जाता है या पूजन स्तुति करने वालों से सन्तुष्ट हो जाता है। आज आस्तिक कहलाने वालों की गतिविधियों को देखकर यही निष्कर्ष निकलता है। लेकिन विवेक कहता है कि ऐसी अनैतिक सत्ता ईश्वर तो नहीं हो सकती, शैतान भले हो।

वह सर्वव्यापी है

चूँकि ईश्वर सामान्य दृष्ट से दिखाई नहीं देता, इसलिए लोग उसे भूल जाते हैं। ईश्वरपरायण व्यक्ति भी उसे मन्दिरों और पूजा स्थलों तक ही सीमित मान लेते हैं। ऐसे सीमाबद्ध भगवान से किसी श्रेष्ठ लाभ की आशा कैसे की जा सकती है? यदि भगवान पर आस्था रखनी ही है, तो उसे सर्वत्र तथा सर्वव्यापी के रूप में ही मानना चाहिए। स्वायंभू मनु अपनी तपस्या के समय अपने आपको उद्‌बोधन देते हुए कहते हैं–

यं न पश्यन्तं चक्षुर्यस्य न रिष्यति।
तं भूतनिलयं देवं सुपर्णमुपधावत।।

भगवान सबके साक्षी हैं। उन्हें बुद्धि-वृत्तियों या नेत्र आदि इन्द्रियाँ नहीं देख सकती, परन्तु उनकी ज्ञानशक्ति अखण्ड है। सामान्य प्राणियों के हृदय में रहने वाले उन्हीं स्वयंप्रकाश अखण्ड परमात्मा की शरण ग्रहण करो।

भ्रमवश लोग यह मानते हैं कि ईश्वर कोई विभिन्न व्यक्ति का नाम है जो किसी को अधिक प्यार करता है, किसी को कम। लेकिन यह धारणा गलत है। भगवान शिव देवी पार्वती को यह मर्म समझाते हुए कहते हैं–

न ह्यस्यास्ति प्रियः कश्चन्नापियः स्वः परोऽपि वा।
आत्मत्वात्सर्वभूतानां सर्वभूतप्रियो हरि।।

भगवान को न कोई प्रिय है और न अप्रिय। उनका न कोई अपना है, न पराया। वे सभी प्राणियों

के आत्मा हैं, इसलिए सभी प्राणियों के प्रिय हैं।

वह न्यायकारी है

कुछ लोग ईश्वर को करुणानिधान, कृपानिधान तक मानकर ही रह जाते हैं। यह मान्यता सत्य होते हुए भी एकांगी है। वे धर्माचरण करने वाले के लिए कृपालु, करुणासागर और दीनदयाल हैं तो अधर्म पर चलने वाले को दण्ड भी देते हैं। सज्जन व्यक्ति उनकी करुणा और दया का लाभ पाते हैं और दुष्ट उनकी न्याय व्यवस्था के अनुसार दण्ड पाते हैं। सज्जनों के लिए वे हर्ष देने वाले और असज्जनों के लिए वे भय का कारण हैं।

भगवान का कार्य केवल सृष्टि ही नहीं, संहार भी है। उन्हें छला नहीं जा सकता। चापलूसी से समझदार व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं होते, फिर अन्तर्यामी भगवान को स्तुतियों द्वारा प्रसन्न कर उनसे यह उम्मीद करना कि वे मेरे लिए न्याय की मर्यादा छोड़ देंगे, हास्यास्पद ही कहा जाएगा। ईश्वर कभी भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता।

वह विराट है, कण-कणवासी है

भगवान के सम्बन्ध में भ्रान्तियाँ इसलिए पैदा हो जाती हैं कि उन्हें शक्ति रूप से नहीं, व्यक्ति रूप से मानने लगते हैं। ईश्वर चेतना रूप है, किन्तु यदि उनका स्थूल रूप ही देखना है तो इस विश्व को ही उनका स्वरूप माना जा सकता है। शुकदेव जी परीक्षित को समझाते हुए कहते हैं–

विशेषस्तस्य देहोऽयं स्थविष्ठश्च स्थवीयसाम्।
यत्रेदं दृश्यते विश्व भूतं भव्यं भवच्च सत्।।

हे राजन्! यह कार्यरूप सम्पूर्ण विश्व जो कुछ कभी था, है या होगा, सबका सब जिसमें दीख पड़ता है, वही भगवान का स्थूल और विराट् शरीर है।

भगवान के इसी विराट् स्वरूप की ही उपासना सर्वश्रेष्ठ लोगों ने सदा की है। अर्जुन को भी भगवान ने अपना यही विराट रूप दिखलाया था और माता यशोदा को भी। काकभुशुण्डि जी और कौशल्या को भी भगवान राम के इसी रूप के दर्शन हुए थे। उन्हें श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के रूप में समझना तथा अपनाना सबसे अधिक लाभप्रद है।

श्रेष्ठ प्रवृत्तियों और भावनाओं के रूप में भगवान को स्वीकार लिया जाए तो वे जिस प्रकार अपने अन्दर अनुभव होते हैं, उसी प्रकार अन्य व्यक्तियों में भी उनकी आभा दिखाई देती है। दूसरों के अन्दर स्थित सत्प्रवृत्तियों का सम्मान ईश्वर का ही सम्मान है। जो द्वेषवश दूसरों के दोषों को ही महत्त्व देते और उनका असम्मान करते हैं, वे ईश्वर का ही असम्मान करते हैं।

प्रतिमा-पूजन ही नहीं, प्रेरणा भी?

मनुष्य ईश्वर को सूक्ष्म रूप से नहीं समझ पाता। किसी स्थूल वस्तु के माध्यम से सुगमता से समझ लेता है। इसी के लिए ऋषियों ने विभिन्न प्रतिमाएँ बनाईं। उनके माध्यम से ईश्वरीय आदर्शों की प्रेरणा मनुष्यों को मिल सकती हैं। किन्तु यदि प्रतिमाओं को ही सब कुछ मान लिया जाय, प्राणियों में व्याप्त ईश्वर की उपेक्षा की जाय तो साधक को लाभ नहीं मिल सकता।

विधि-विधान महत्त्वपूर्ण हैं। पूजन भी फलप्रद है। पर विधि-विधान किसके लिए? पूजन किसका? मूर्ति के आकार का या उसमें प्रतिष्ठित प्राण का, चेतना का? यदि आकार मात्र का पूजन हो रहा है तो वह चेतना क्या सिर्फ उस मूर्ति में सीमित है? जीवों के भीतर भी तो वही चेतना है। अतः जीवों का अपमान भी उसी चेतना का ही अपमान हुआ। तो अपने ही अपमान से देवता या ईश्वर भला कैसे प्रसन्न हो सकते हैं? इसलिए सिर्फ प्रतिमा के पूजन का अर्थ है समस्त जीवों में भरी ईश्वरीय चेतना की उपेक्षा।

भगवान कपिल इस बात को और भी स्पष्ट करते हुए कहते हैं–

यो मां सर्वेषु भूतेषु सन्तमात्मानमीश्वरम्।
हित्वार्चा भजते मौढ्याद्भस्मन्येव जुहोति स।।

मैं सबका आत्मा, परमेश्वर सभी भूतों में स्थित हूँ। ऐसी दशा में जो मोहवश मेरी उपेक्षा करके केवल प्रतिमा के पूजन में ही लगा रहता है, वह तो मानो भस्म में ही हवन करता है।

भस्म निर्जीवता का प्रतीक है। हवन का लाभ अग्नि से ही मिल सकता है। इसी प्रकार प्रतिमा के माध्यम से यदि सर्वव्यापी परमात्मा पर आस्था नहीं बढ़ती तो प्रतिमा पूजन का कोई लाभ नहीं, बल्कि समय और साधन नष्ट ही होते हैं।

ईश्वर और धर्म का स्वरूप

निराकार ईश्वर साकार रूप से अवतार लेकर भी जनकल्याण के उद्देश्य से ही आते हैं। उनके चरित्र देखकर लोग प्रेरणा लेते रहें, यही अवतार का उद्देश्य होता है। वैसे श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के रूप में उन्हें सदैव ही प्रकट किया और अपनाया जा सकता है। देवी सती के पिता दक्ष प्रजापति से उनका यज्ञ विध्वंस हो जाने के बाद भगवान विष्णु स्पष्ट रूप से कहते हैं–

तपो मे हृदयं ब्रह्मं स्तनुर्विद्या क्रियाऽऽकृतिः।
अङ्गानि क्रतवो जाता धर्म आत्मासवः सुराः।।

ब्रह्मन्! तपस्या मेरा हृदय है, विद्या शरीर है, कर्म आकृति है, यज्ञ अंग है, धर्म मन है और देवता प्राण है।

तपस्या आत्मपरिष्कार, आत्मविकास अथवा जनकल्याण के लिए अपनाए गए कष्टपूर्ण जीवन क्रम को कहते हैं। विद्या मात्र अक्षर ज्ञान नहीं। सही दिशा जिससे मिल सके, वही विद्या है। कर्म तो जीवन का अभिन्न अंग है। यज्ञ कहते हैं लोककल्याण के लिए दिये जाने वाले योगदान को, किये जाने त्याग-बलिदान को। धर्म कर्तव्यपरायणता तथा सदाचार है। देवता वे हैं जो दूसरों के हित में, दूसरों को सहयोग अनुदान देने में ही लगे रहते हैं। जीवन में यह सब प्रवृत्तियाँ आने लगें तो समझना चाहिए ईश्वर का प्रकाश अपने अन्दर आ रहा है। भजन, पूजन, तीर्थसेवन, सेवा आदि सभी क्रम इसी उद्देश्य से किए जाते हैं।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । वाङ्मय-31 'संस्कृति संजीवनी श्रीमद्‌भागवत एवं गीता', पृष्ठ 5.14 से संकलित, संपादित

धर्मो रक्षति रक्षितः

धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा

समय की माँग है कि हम केवल स्नान-दान, पूजा-पाठ, व्रत-अनुष्ठान, भजन-कीर्तन जैसे कर्मकाण्डों से ही पुण्य कमाने और भगवान को पा लेने की मानसिकता से ऊपर उठें, धर्म को सही अर्थों में जीवन में धारण करें।

धर्म वह वस्तु है, जिसकी रक्षा करने से समाज की रक्षा होती है। धर्म मात्र पूजा-पाठ या स्नान-ध्यान, मंदिर दर्शन, तीर्थयात्रा, अनुष्ठान जैसे कर्मकाण्डों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि

जीवन के उन शाश्वत सिद्धांतों को जीवन में धारण करना धर्म है, जिससे मनुष्य में देवत्व का उदय होता है। सत्यनिष्ठा, प्रेम, न्यायनिष्ठा, सादगी, सज्जनता, उदारता, शालीनता, परोपकार, अहिंसा, अपरिग्रह जैसे सद्गुणों को व्यक्तित्व में धारण करना धर्म है। देवदर्शन, यज्ञ, तीर्थयात्रा, उपासना, सेवा जैसे कर्मकाण्ड इन्हें धारण करने की प्रेरणा ग्रहण करने के और उनका अभ्यास करने के साधन हैं। इनके सतत अभ्यास से व्यक्ति धर्मनिष्ठ होता जाता है।

धर्म धारणा से मनुष्य में देवत्व का उदय होता है। मनुष्यों से ही समाज बनता है। धर्म की रक्षा तभी संभव है जब समाज का हर व्यक्ति धर्म की, सिद्धांतों की रक्षा करने लगे। हर मनुष्य में देवत्व का उदय होगा तो समाज की समस्याओं का समाधान होना और धरती पर स्वर्ग की सृष्टि होना अवश्यंभावी है। हम धर्म की रक्षा करेंगे, तो धर्म हमारी रक्षा करेगा।

आज संसार में जितनी भी कष्ट-परेशानियाँ हैं, वे इसलिए हैं कि लोग धर्म को ताक पर रखकर केवल चिह्न पूजा करने लगे हैं। कुछ ओछी और स्वार्थी मनोवृत्ति के लोग भी धर्मक्षेत्र में घुस पड़े हैं, जो भोले-भाले लोगों की धार्मिक आस्थाओं का दोहन कर रहे हैं। धर्मगुरुओं में जहाँ अधिकांश श्रेष्ठ पुरुष थे और धर्म की रक्षा करने वाले उपदेश दिया करते थे, वहीं ऐसे नकली लोग भी धर्मगुरुओं में शामिल हो गए और व्यक्तिगत लाभ की प्रेरणा से नकली बातों को धर्म में जोड़ दिया। कालान्तर में असली और नकली बातें ऐसी शक्ल में आ गईं कि यह पहचानने में कठिनाई होती है कि हमारे सामने धर्म का जो स्वरूप उपस्थित है उसमें कितनी बातें असली हैं, कितनी नकली।

आइये! धर्म का मर्म समझने का प्रयास करें और धर्म को उसके सच्चे स्वरूप में जीवन में धारण करने के लिए तत्पर हों, क्योंकि धर्म की रक्षा से ही हमारी रक्षा संभव है। निम्न जानकारियाँ इस कार्य में बड़ी उपयोगी सिद्ध होंगी , ऐसी आशा है।

धर्म कल्याणकारी है

भगवान की इच्छा: भगवान ने मनुष्य को बनाते समय यह अपेक्षा रखी थी वह अपना स्वयं का ऐसा मर्यादापूर्ण आदर्श जीवन बनाये, जिससे स्वयं उसका जीवन सफल हो जाये। वह अपने परिवार, समाज व युग को भी अपने कृत्यों से, अपने आचरणों से व्यवस्थित बनाये रखे। इस दृष्टि से धर्म का लक्ष्य मनुष्य में शिवत्व का विकास है।

धर्म एक ही है, मानव धर्म : धर्म सार्वभौम है। पूरे विश्व का धर्म एक ही है, जिसे हम विश्वधर्म , मानवधर्म आदि कुछ भी कह सकते हैं। धर्म का तो एक ही लक्ष्य है 'सत्य', 'शिव', 'सुन्दर'; अर्थात् ऐसे आचरण जो सत्य हों, शुभ हों, कल्याणकारक हों तथा सुन्दर हों। धर्म तो अपने स्थान पर स्थिर, अटल, शास्वत् है।

सर्वे भवंतु सुखिन: धर्म मानव, समाज और संस्कृति का मूल आधार है। इसी पर संसार का 'शुभ' और 'कल्याण' टिका हुआ है। धर्म एक अपरिवर्तनशील शास्वत सत्ता है, सार्वभौम शक्ति है जिसका लक्ष्य है ''**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया**।''

धर्म सागर है, सम्प्रदाय नदियाँ

धर्म के दो भाग हैं, पहला कलेवर और दूसरा प्राण। प्राण धर्म के वे शाश्वत सिद्धान्त हैं, जिसकी सत्ता सदैव एक जैसी रहती है। धर्म का अस्तित्व इस प्राणसत्ता पर ही टिका हुआ है। धर्म का कलेवर देश, काल, समय के अनुरूप परिवर्तनशील है। समय की माँग के अनुरूप इसमें परिवर्तन और परिष्कार होता भी रहना चाहिए।

संसार में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, पारसी, बौद्ध, ताओ, शिन्तो आदि धर्म के जो अलग-अलग नाम दिखाई देते हैं, उसका कारण उनका कलेवर ही है। इनके प्रवर्तकों ने धर्म की मूल भावनाओं को साथ रखकर आवश्यकतानुसार कुछ विशेषताओं को उभारा है, इसीलिए उनकी अलग पहचान बनी। क्रिश्चन धर्म प्रेम और सेवा को, जैन अहिंसा और अपरिग्रह को, बौद्ध विवेक को, मुस्लिम भाईचारे को, हिन्दू ज्ञान एवं भक्ति को प्रधानता देते हैं, लेकिन धर्म के मूल तत्त्वों का समावेश सभी में है।

इस्लाम शब्द 'सल्म' से निकला है, जो शांति या अमन का पर्याय है। वैदिक धर्म मानवमात्र को आत्मसत्ता का अभिन्न अंग मानने की प्रेरणा देता है। क्रिश्चियनेटी शब्द 'क्रिस्टास' शब्द से बना है जिसका अर्थ है ईश्वरीय ज्ञान में नहाया हुआ अर्थातू मानवमात्र में एक सत्ता देखने वाला। शिन्तो का अर्थ है सब आत्माओं का एक परम पथ। इस प्रकार सभी धर्म मानवता के उत्थान और सामाजिक समरसता, सुख-शांति का संदेश देते हैं। आज उनके अनुयायियों में मतभेद दिखाई देते हैं, लेकिन उन प्रवर्तकों ने अपने को मानवतावादी ही माना है, धर्म के हर मूल तत्व को धारण किया है।

सम्प्रदाय : धर्म एक है, लेकिन लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अनेक मार्ग बना लिए गये हैं। ये धर्म नहीं, सम्प्रदाय हैं। हर सम्प्रदाय में अलग-अलग विधान-कर्मकाण्ड दिखाई देता है, उसका लक्ष्य एक है। वह है परमात्मा की प्राप्ति और मानवता का कल्याण।

धर्म महासागर है तो सम्प्रदाय नदियाँ, जो विभिन्न स्थानों ओर दिशाओं से आकर इस महासागर में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विलीन हो जाती हैं। लेकिन अज्ञानता, अहंकार और दुर्भाग्यवश लोग अपने-अपने सम्प्रदायों को ही श्रेष्ठ मानकर समाज में विग्रह पैदा करते दिखाई देते हैं। वे अपने धर्म-सम्प्रदाय को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने और अन्यों पर थोपने पर तुले देखे जाते हैं। यदि नदियाँ अपने को ही सागर मान बैठें तो वे सागर तो नहीं हो जायेंगी।

कर्म और भाव का संयोग हो

धर्म के दो स्वरूप हैं-एक क्रियात्मक और दूसरा भावनात्मक। श्रम, संयम, न्याय, सत्साहस आदि धर्म का क्रियात्मक, अर्थात् बाह्य स्वरूप है। सज्जनता, सरलता, सादगी, सहानुभूति, संवेदना, दया, करुणा, विवेक आदि वे दिव्य अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें धर्म का भावनात्मक अथवा आभ्यांतरिक स्वरूप कहा जा सकता है। भावना यदि उपासना है तो क्रिया साधना। सदाचार धर्म का बाह्य स्वरूप है तो सद्भाव उसका आंतरिक स्वरूप।

धर्म में क्रिया और भाव दोनों का संयोग आवश्यक है। धन और ऋण विद्युत धाराओं की तरह जब तक वे सम्बद्ध नहीं होंगे, तब तक प्रकाश संभव नहीं। दोनों के समन्वय से ही धर्माचरण में पूर्णता आती है।

किसी व्यक्ति को दीन-हीन, असहाय स्थिति में देखकर हमारे मन में सहानुभूति और संवेदना के भाव तो उत्पन्न होते हैं, किन्तु उनकी सेवा-सहायता नहीं की जाती तो उसे धर्म का अपूर्ण आचरण माना जायेगा। इसी प्रकार कोई असद्भावना, अहंकार प्रदर्शन या नामवरी के लिए किसी की सेवा, सहायता करता है, किन्तु दुखी-पीड़ित जन के प्रति सच्ची सहानुभूति नहीं रहती, तो इस कार्य को भी धर्म का छद्म आचरण ही कहा जाएगा। धार्मिक जन यदि वास्तव में धर्म लाभ प्राप्त करना चाहते हैं तो पूर्ण धर्म का आचरण परमावश्यक है।

धर्म उपयोगी भी है और आवश्यक भी

धर्म जीवन का प्राण है। प्राणवायु के समान ही इसके बिना एक क्षण भी रह सकना संभव नहीं है। महात्मा टॉलस्टॉय ने अपनी पुस्तक 'धर्म क्या है?' में लिखा है-''जो लोग धर्म को बहिष्कृत करके विज्ञान को ही अपने जीवन का पथ-प्रदर्शक बनाना चाहते हैं, वह बहुत बड़ी भूल करते हैं। भौतिक विज्ञान केवल उन बातों की ही समीक्षा करता है, जो वर्तमान काल में उपस्थित हैं, वह जीवन की आने वाली अगणित समस्याओं के समाधान की योग्यता नहीं रखता, क्योंकि वैज्ञानिक स्वयं इन प्रश्नों को अपनी सीमा से बाहर समझते हैं।''

वर्तमान समय में बौद्धिक वर्ग के कुछ व्यक्ति धर्म से नाक-भौं सिकोड़ने के दो कारण हैं-(1) धर्मतंत्र की विकृतियाँ और (2) अंधानुकरण की प्रवृत्ति। निःसंदेह धर्म के नाम पर फैले पाखण्ड ने सदियों तक लोगों को दिग्भ्रांत किया है। श्रद्धा के नाम पर तथाकथित धर्माचार्यों ने जनभावनाओं का दोहन किया है। विश्वास के नाम पर अंधविश्वास पनपा है।

धर्म के नाम पर उपद्रव, अत्याचार होता हो और रक्त की नदियाँ बहाई जाती हों तो उसे देखकर एक बुद्धिजीवी का धर्म से घृणा करना स्वाभाविक है। लेकिन विकृति को ही धर्म का स्वरूप मान लेना तो भारी भूल होगी। धर्म क्षेत्र में विकृतियों का कारण अधर्म है, न कि धर्म। कुछ लोग अपने संकीर्ण स्वार्थों के कारण अधर्म को ही धर्म के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। भोले एवं अज्ञानी प्रकृति के लोगों के समक्ष जब अधर्म को धर्म का जामा पहनाकर प्रस्तुत किया जाता है, तो वे उस अधर्म को ही धर्म समझ लेते हैं।

वस्तुतः धर्म इतना सशक्त और महान है कि मनुष्य की प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत कर सके। उसके स्वस्थ स्वरूप को जन-सामान्य के समक्ष रखा जा सके, सिद्धांतों को समझाया जा सके तो वह जनसामान्य का सर्वांगीण विकास करने में पूर्णतया समर्थ है।

आवश्यकता धर्म को अनुपयोगी या अमान्य ठहराने की नहीं, उसके साथ जुड गई अन्ध परम्पराओं और विकृतियों को दूर करने की है। यदि धर्म-धारणा को व्यावहारिक जीवन में समाविष्ट करके उत्कृष्ट गतिविधियाँ अपनाने वाले सच्चे धार्मिक व्यक्ति अपना उदाहरण प्रस्तुत कर सकें तो जनसाधारण को यह विश्वास करने में तनिक भी कठिनाई न होगी कि धार्मिकता, प्रतिगामिता नहीं, वरन् सच्चे अर्थों में प्रगतिशीलता है। ऐसी प्रगतिशीलता, जिस पर व्यक्ति और समाज का कल्याण सुनिश्चित रूप से आधारित है। साधना, स्वाध्याय, सत्संग आदि प्रवृत्तियाँ इसी शुद्ध धर्म धारणा को समझना और अपनाना होता है।

महर्षि वाल्मीकि के जीवन से सीखें

हमारा आचरण और कर्म धर्ममय हो

अपने परिवार के सदस्यों का पालन करने के लिए लूटपाट करने वाले दस्यु जीवन बिताने वाले वाल्मीकि ने एक बार सप्तऋषियों को पकड़ लिया। सप्तऋषियों ने पूछा, ''भाई असहाय लोगों को इस तरह मारना, लूटना तो पाप है, तुम यह सब क्यों करते हो?''

इस पर वाल्मीकि ने उत्तर दिया, ''यह तो मेरी जीविका है। अपने वृद्ध माता-पिता, पत्नी व सन्तान के पालन-पोषण करने के लिए यह तो मेरा धर्म है, जो मुझे करना ही पड़ता है। भला अपने पर आश्रित लोगों का पानल-पोषण करना क्या पाप है?''

इस पर सप्तऋषियों ने समझाया, ''अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए दूसरों के हितों का हनन करना, अपना पेट भरने के लिए दूसरों को भूखों मारना, तड़पाना, अपनी पारिवारिक सुख-समृद्धि के लिए दूसरे परिवारों को कष्ट व असुविधा में डालना, बिना श्रम किए दूसरों का श्रमार्जित धन छीनकर उसका उपभोग करना धर्म नहीं माना जा सकता।''

वाल्मीकि को बात समझ में आई। वे सोचने लगे यह तो ठीक है कि वे मनुष्यों को मारकर, उनकी सम्पत्ति को छीनकर अपने आश्रितों का पेट भर रहे हैं, परन्तु इससे दूसरों का उत्पीड़न होता है इसलिए इसे धर्म नहीं माना जा सकता। इस प्रकार की अनुभूति ने वाल्मीकि को दस्यु से महर्षि बना दिया।

वाल्मीकि के जीवन में जब 'धर्म' का तत्त्व प्रविष्ट हुआ तो स्वयं उनका व्यक्तिगत परिष्कार तो हुआ ही, समाज की भी रक्षा हुई। जो दस्यु के रूप में समाज का उत्पीड़न करते थे, वे ही धर्म का साक्षात्कार कर धर्म को अंगीकृत कर करोड़ों मनुष्यों के मार्गदर्शक बन गए।

अधर्म के प्रति उदासीनता भी पाप है

यह सच है कि संसार में अवांछनीयता कम और उत्कृष्टता अधिक है, तभी तो यह संसार अभी तक जीवित है। आग दुनिया में बहुत है पर पानी से अधिक नहीं। इतने पर भी हम देखते हैं कि अनाचार घटता नहीं, बढ़ता ही जाता है। इसके रोकथाम के लिए सरकारी प्रयत्न बहुत हुए पर उनकी पकड़ में दुष्टता की पूँछ ही आती है। आश्चर्य इस बात का है कि सज्जनता का बहुमत होते हुए भी असुरता की शक्ति क्यों अजेय बनती जा रही है? देवत्व उसके आगे पराजित होता, हारता और झक मारता क्यों दिखाई देता है?

कारण यह है कि जनमानस में से उस रोष-आक्रोश का, शौर्य-साहस का अस्तित्व मिटा नहीं, तो घटा जरूर है। इस कसौटी पर औसत आदमी डरपोक, कायर, दब्बू, संकोची, पलायनवादी और कुछ वैसा ही बन जाता है, जैसा कि गीता का विषादग्रस्त अर्जुन था। समय की माँग है कि हम भी युग की पुकार को सुनें, किंकर्त्तव्यमूढता और उदासीनता छोड़े तथा धर्म की रक्षा के लिए कदम बढ़ायें।

धर्म के प्रति जिसे जितना प्रेम हो, वह अधर्म के प्रति उतना ही प्रतिरोध रखे। स्वयं अनाचार से बचे और दूसरों को बचाये। अनीति को देखते हुए भी चुप बैठे रहना, उपेक्षा करना, आँखों पर परदा डाल लेना जीवित-मृतक का चिह्न है। जो उसका समर्थन करते हैं, वे प्रकारांतर से स्वयं ही दुष्कर्मकर्त्ता हैं। मूक रहकर दुष्कर्म होते देखते रहना भी अधर्म को बढ़ावा देना है, जो पाप है।

समय की माँग है कि हम यह न सोचें कि जब अपने पर विपत्ति आयेगी, तब देखेंगे। आग अपने छप्पर में लगी हो या कहीं और, उसे बुझाने को आत्मरक्षा का अप्रिय मोर्चा मानकर तुरंत विनाश से लड़ा जाय।

धर्म की स्थापना और अधर्म को मिटाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का योगदान होना ही चाहिए। यदि सीधे टकराने की स्थिति न हो तो असहयोग और विरोध की दृष्टि से जितना कुछ बन पड़े, अवश्य करना चाहिए।

कुछ मार्गदर्शक तथ्य

- ईश्वर सर्वव्यापी और न्यायकारी है। धर्म का अर्थ है उसके अनुशासन को स्वीकार। वह किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। भक्तों को मँहगे उपहार और मनुहार नहीं, अंतःकरण की पवित्रता और भावनाओं का ही सत्परिणाम मिलता है।
- प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए उन्हें जीवन में धारण करना धर्म है।
- धर्मशीलों को अहंकार प्रदर्शन, ठाट-बाट, दिखावा आदि से परहेज़ करना चाहिए।
- स्वाद और स्वार्थ के लिए मांसाहार, जीवहत्या, बलिप्रथा जैसी वे क्रूर प्रथाएँ जिनमें अन्य प्राणियों को कष्ट होता हो, अधर्म है, इन्हें बंद होना चाहिए।
- हम धर्म-कर्म करते रहें और उसका प्रतिफल न हो, ऐसा हो नहीं सकता। हम लोभ, मोह के वशीभूत न हों, स्वार्थी तत्त्वों से बचें, बचायें।

देव संस्कृति की एक अनमोल धरोहर : कुम्भ महापर्व

आवश्यकता है वास्तविक महत्त्व समझने और लाभ उठाने की

कथा कुम्भ की

कुम्भ भारतीय संस्कृति का महापर्व है। इस पर्व पर स्नान, दान, ज्ञान मंथन के साथ ही अमृत प्राप्ति की बाद कही जाती है। पुराणों में कथा है कि कश्यम ऋषि का विवाह दक्ष प्रजापति की पुत्रियों दिति और अदिति के साथ हुआ था। अदिति से देवों की उत्पत्ति हुई और दिति से दैत्य पैदा हुए। एक बार देवताओं और दैत्यों ने समुद्र में छिपी विभूतियों को प्राप्त करने के लिए समुद्र-मंथन किया। इससे 14 रत्न प्राप्त हुए, जिनमें से एक अमृत कलश भी था। देवता और दैत्य दोनों ही चाहते थे कि अमृत उन्हें मिले, वे उसे पीकर अमर हो जायें।

अमृत पाने के लिए दोनों के बीच युद्ध छिड़ गया। स्थिति को बिगड़ता देख देवराज इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को संकेत किया। जयंत अमृत कलश लेकर भाग चला और दैत्य उसका पीछा करते रहे। अमृत कलश को सुरक्षित रखने में बृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा ने बड़ी सहायता की। बृहस्पति ने दैत्यों के हाथों में जाने से कुम्भ को बचाया, सूर्य ने उसे फूटने से और चंद्रमा ने अमृत को छलकने से बचाया। इसके बावजूद संग्राम की उथल-पुथल में चार बूँदें छलक गयीं। ये हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नाशिक में गिरीं। इन्हीं चार नगरों में प्रत्येक 12 वर्ष में कुम्भ मेले आयोजित होते हैं।

कुम्भ मेलों में लाखों लोग अमृत प्राप्ति की कामना से इनमें भाग लेते हैं। पुराणों में इसकी बड़ी महत्ता है। ब्रह्मपुराण के अनुसार संगम स्नान का फल अश्वमेध यज्ञ के समान होता है। अग्नि पुराण में लिखा है कि कुम्भ प्रतिदिन स्नान करोड़ों गायें दान करने के बराबर होता है। इनमें स्नान, दान, ज्ञान मंथन, मुण्डन आदि का विशेष महत्त्व बताया गया है।

विचारणीय प्रश्न यही है कि वह अमृत कौन सा है, जो कुम्भ में प्राप्त होता है या हो सकता है।

ऋषियों की महान परम्परा

ईश्वर और धर्म के प्रति आस्था एक महान विभूति है। यह आस्था व्यक्ति को सद्गुणी, संस्कारवान बनाती है, व्यक्ति की अंतर्निहित उन विशेषताओं को उभारती है, जिनके कारण मनुष्य को सृष्टि का मुकुटमणि, ईश्वर का राजकुमार बनने का अवसर मिला है। मानवीय आस्था ही देव संस्कृति की जननी है, मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण करने वाली दिव्य सम्पदा है।

देव संस्कृति के जनक अपना जीवन लोकमंगल के लिए समर्पित करने वाले आत्मज्ञानी, तपस्वी ऋषि-मुनि रहे हैं। वे ही सनातन काल से मानवीय आस्था का पोषण करते रहे हैं। समाज में मंदिर, आश्रम, आरण्यकों की स्थापना, व्रत-उपवास, पर्व-त्यौहार, सत्संग-मेले जैसे क्रम इसी मानवीय आस्था के पोषण और परिष्कार के माध्यम हैं।

पुण्य और पाप

वस्तुतः जिन्हें हम धर्म-कर्म मानते हैं वे संस्कार, सद्गुण, सद्विचार एवं सद्भावों को जीवन में आत्मसात करने का अभ्यास हैं। हमारे ऋषियों-मनीषियों ने इनके माध्यम से जो विचार और व्यवहार व्यक्ति की प्रगति और समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है, उसे जीवन के अभ्यास में लाने की मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यवस्था बनाई। नर-नारी, बच्चे से लेकर बूढ़े और समाज के हर शिक्षित-अशिक्षित व्यक्ति की इन कार्यों के प्रति आस्था बनी रहे, इसके लिए इन्हें 'पुण्य कर्म' कहा गया। जो कर्म मानवीय प्रगति और सामाजिक उन्नति में बाधक हैं उन्हें 'पाप कर्म' मानकर उनसे दूर रहने की प्रेरणा दी गई।

गौपालन, तुलसी स्थापना, गंगा स्नान, तीर्थयात्रा, एकादशी व्रत, ब्रह्मचर्य आदि पुण्यदायी धर्मकृत्य हैं। यह इसलिए हैं, क्योंकि गाय हमारी सामाजिक प्रगति का आधार रही है। उससे दूध, गोबर, बछड़े मिलते हैं। तुलसी अनेक रोगों को दूर करने वाली अमोघ औषधि है। गंगा के जल में ऐसे रासायनिक तत्त्व पाये जाते हैं जो स्वास्थ्य सुधार के लिए उपयोगी हैं। तीर्थयात्रा में देशाटन केअनुभव, सत्पुरुषों का सत्संग और वायु परिवर्तन होता है। एकादशी व्रत रखने से पंद्रह दिन का कब्ज पच जाता है। ब्रह्मचर्य से शरीर बलवान होता है। इन प्रत्यक्ष लाभों को देखते हुए ही इन्हें पुण्यदायी धर्मकार्य कहकर सामाजिक परम्पराओं में गूँथ दिया गया है।

बात महाकुम्भ की

इन्हीं पुण्यदायी परम्पराओं में एक है 'कुम्भ में स्नान'। हमारे पुराण आदि आर्ष ग्रंथों में अनेक तथ्यों को अलंकारिक ढंग से भी प्रस्तुत किया गया है, ताकि जनमानस की उन पर आस्था प्रगाढ़ हो, उन्हें सहजता से समझा और याद रखा जा सके। आइये! कुम्भ की पौराणिक कथा को इस तरह से समझने का प्रयास करते हैं।

समुद्र मंथन : ईश्वर ने मनुष्यमात्र को एक समान बनाया है, लेकिन उनमें स्वार्थी और परोपकारी लोगों का अस्तित्व सदा से रहा है। जो परोपकारी हैं, समाज का भला चाहते हैं वे देवता और जो दूसरों के लिए पीड़ादायक होते हैं, मानवीय गरिमा को छोड़कर दूसरों के हिस्से का धन-साधन बटोरते रहते हैं, वे दैत्य प्रकृति के होते हैं।

समुद्र मंथन वस्तुतः विचारों का ही मंथन है, जिससे बड़े उपयोगी आविष्कार होते रहते हैं। अच्छे-बुरे हर तरह के व्यक्ति इनका लाभ लेकर अपनी सामर्थ्य बढ़ाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए देखें-

परमाणु ऊर्जा की खोज मानवीय सुख-समृद्धि के लिए एक अच्छी खोज है। देव प्रकृति के लोग उसके सदुपयोग से समाज की ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूरी कर सकते हैं। लेकिन बुरी नीयत वालों ने, जिन्हें अलंकारिक रूप से दैत्य भी कहा जा सकता है, संसार के विनाश का माध्यम बनाने की ठान ली है। इसीलिए कुम्भ की पौराणिक कथा की तरह इस अमृत को दैत्यों के हाथों में पड़ने से बचाये रखने के लिए छिपाये रखना पड़ता है।

कुम्भ का अमृत है-सद्ज्ञान

पौराणिक काल की तरह आज भी देवी-देवताओं का चित्रण सुन्दर शृंगारित, सौम्य मुस्कान युक्त होता है और दैत्यों को सींग एवं बड़े-बड़े दाँतों वाला दिखाया जाता है, लेकिन थे तो दोनों एक जैसे ही मानव। दोनों ही शक्तिशाली थे, तपस्वी थे, दिव्य विभूतियों से सम्पन्न थे। बस अन्तर था तो उनके चिंतन में। देवता अपनी विभूतियों को बाँटकर संसार को खुशहाल बनाने में सहयोगी होते थे और दैत्य दूसरों के अधिकारों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर अपना आतंक फैलाते रहते थे।

कुम्भ की पौराणिक कथा में अमृत की चार बूँदें हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नाशिक में गिरने और वहाँ कुम्भ मेले लगने की बात कही गई है। वस्तुतः सनातन संस्कृति के परम तपस्वी ऋषियों-धर्मगुरुओं ने इन चार स्थानों पर हर बारह वर्ष में एक बार एकत्रित होकर जनमानस की आस्थाओं का पोषण करने का क्रम बना रखा था। यह परम्परा आज भी चली आ रही है। समाज की विकृतियों को दूर करने, समस्याओं का निराकरण करने, व्यक्तिगत उन्नति और सामाजिक प्रगति के सूत्र प्रदान करने का नैतिक दायित्व इन्हीं महात्माओं पर होता था। क्षेत्रीय संत, सुधारक, धर्मगुरुओं के साथ आमजनमानस भी उनके इस ज्ञानामृत का लाभ लेने इन मेलों में पहुँचता था।

जिस अमृत को पीकर अमर हो जाने की कल्पना आम जनमानस में है, वैसा अमृत आज तक तो किसी को मिला नहीं है। वस्तुतः ज्ञान ही वह अमृत है, जिसे पाकर और जीवन में अपनाकर बुद्ध, महावीर, नानक, गोविंद, ईसा, मुहम्मद पैगंबर से लेकर गाँधी-विनोबा जैसे महापुरुष इतिहास में अजर-अमर हो गये।

सद्ज्ञान ही वह अमृत है जिसके पयपान से मनुष्यता का मोल समझ में आता है। ज्ञान से ही अंतर्निहित अकूत शक्तियों को जगाने और संभावनाओं को साकार करने का अवसर मिलता है। ज्ञान से व्यक्ति सादगीपूर्ण जीवन में भी स्वर्ग जैसे सुख और शांति की अनुभूति कर सकता है। सद्ज्ञान का अभाव है तो कुबेर का धन और स्वर्ग जैसे साधन पाकर भी वह सदा हताश, निराश, बेचैन और चिंताग्रस्त ही रहेगा।

सर्वोत्तम है सद्ज्ञान का दान

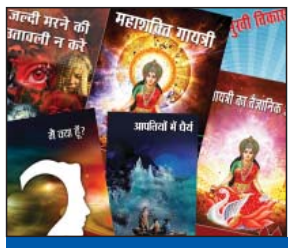

युग साहित्य स्वयं पढ़ें, सबको पढ़ायें

कुम्भ मेलों में ज्ञानदान की जो प्राचीन पुण्य परम्परा थी, उसे पुष्ट करने के लिए एक सशक्त विचार क्रांति अभियान चलाने की आवश्यकता है। यह कार्य वशिष्ट, विश्वामित्र, भगीरथ जैसे लोकमंगल के लिए जीवन अर्पण करने वाले दिव्य ऋषियों की सोच को जन-जन तक, घर-घर तक पहुँचाकर ही संभव है।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने इस युग में उसी ऋषि परम्परा का निर्वाह करते हुए प्रचण्ड तप किया और वर्तमान युग की समस्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। उनकी प्रेरणा ने लाखों लोगों की समस्याओं का समाधान कर उन्हें नया जीवन दिया है। उनकी लिखी 3200 पुस्तकों में यह ज्ञानामृत विद्यमान है। श्रद्धालु इसे स्वयं पढ़ें, औरों को पढ़ायें, जन-जन तक पहुँचाने में सहयोगी बनें ताकि कुम्भ जैसे महान धार्मिक अनुष्ठान में भागीदारी का वास्तविक पुण्यलाभ प्राप्त हो सके, जीवन धन्य हो जाये।

गायत्रीतीर्थ, शांतिकुंज
हरिद्वार (उत्तराखंड)
फोन-01334-260602

जिनके प्रमुख सौजन्य से प्रवाहित हो रही है युगतीर्थ शांतिकुंज से निकली यह ज्ञानगंगा

(इस कुंभ में बाँटे जा रहे हैं प्रज्ञा अभियान के एक लाख अंक)

कुम्भ के वातावरण का लाभ लें, प्रयोजनों से जुड़ें

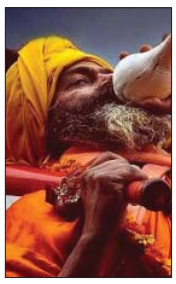

आज कुम्भ मेलों का आकार निरंतर बढ़ता जा रहा है, लेकिन मुख्य प्रयोजन कितना पूरा हो रहा है, यह विचारणीय है। इनके माध्यम से समाज में एकता, शुचिता, समता, ममता और सद्भावना का कितना विकास हो रहा है, इसका आकलन भी होना चाहिए। मेले में आए श्रद्धालु यदि परम्पराओं की लकीर ही पीटकर रह गए और कुछ सार्थक सीख लेकर न लौटे तो इन मेलों का क्या लाभ?

- सरकारें ऐसे मेलों को पर्यटन के विकास के रूप में देख रही हैं। अच्छी बात है कि इस प्रकार संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता ह। लेकिन दृष्टि केवल अर्थोपार्जन ही नहीं, देव संस्कृति के विकास-विस्तार की होनी चाहिए।
- धर्मक्षेत्र के लोग जब लोकमंगल की चाह की बजाय इसे शक्ति प्रदर्शन का माध्यम बना लेते हैं तो वे अपने मूल प्रयोजन से भटकते दिखाई देते हैं।
- आज के युग में धर्म भी एक व्यापार बनता जा रहा है। कथा-प्रवचनों में लच्छेदार बातों से श्रद्धालुओं को सम्मोहित करने और धर्म को धन कमाने व विलासिता के साधन जुटाने के समाचार आये दिन देखने-सुनने-पढ़ने को मिलते हैं। इन नकली धर्माचार्यों से सावधान रहने के लिए श्रद्धालु को अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए। लोभ-लालच में न पड़कर, आकर्षणों में न फँसकर सही लोगों का साथ ही लेना चाहिए।
- पुण्य कमाने की प्रचलित मान्यताएँ अच्छी हैं, लेकिन वह परम्परा ही न रहे, प्रयोजन भी पूरा हो। दान के साथ अहंकार न जुड़े, दूसरों की सहायता करने का भाव हो। दान हर किसी को नहीं, जरूरतमंदों को ही दिया जाय, अन्यथा वह भिक्षावृत्ति और मुफ्तखोरी को बढ़ाकर दानदाता को पाप का ही भागीदार बनाएगा।
- मुण्डन एक पवित्र संस्कार है। इसमें घटिया विचारों को हटाकर श्रेष्ठ चिंतन की स्थापना की प्रेरणा निहित है। केवल बाल उतरवा देना ही पर्याप्त नहीं, वैसे संकल्प लिए जायें, प्रयास किए जायें।

देव संस्कृति के उन्नायक-पुनरुद्धारक

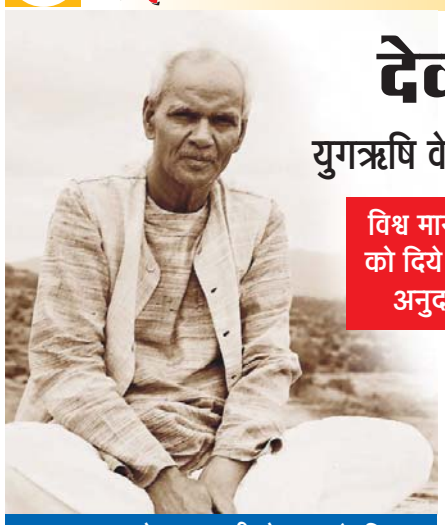

युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

“हम लेखक नहीं हैं, हमारे विचार क्रांति के बीज हैं। हमारे लिखे शब्दों से आग निकलती है। हमारे विचारों की आग को, भावनाओं की आग को, संवेदनाओं की आग को आप घर-घर पहुँचा दीजिए। ये विचार अगले दिनों धमाका करेंगे।

- **युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य**

विश्व मानवता को दिये दिव्य अनुदान | एक सच्चे ब्राह्मण और संत के रूप में अनुकरणीय जीवन | गायत्री और यज्ञ को जन-जन तक पहुँचाया | युग संजीवनी स्वरूप साहित्य सृजन : 3200 पुस्तकें लिखीं | करोड़ों देवात्माओं का विराट संगठन, एक देव परिवार | धर्म-अध्यात्म की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के विस्तारक

आज से कई दशकों पहले से इस दुनिया में हा-हाकार मचा है। मानवता के सर्वनाश का खतरा मँडरा रहा है और निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। देश और दुनिया के तमाम वैज्ञानिक पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक आपदा, बढ़ती जनसंख्या, अणु आयुधों की होड़ जैसे अनेक विषयों का विश्लेषण करने पर आज भी यही बात बार-बार दोहरा रहे हैं कि धरती सर्वनाश के कगार पर जा पहुँची है। लेकिन प्रचण्ड तपस्वी युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सन् 1986 में ही घोषणा कर दी थी कि परमात्मा अपनी बनाई इस दुनिया को नष्ट नहीं होने देगा। यह दुनिया बदलेगी, इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य लेकर आ रही है।

यह केवल युगऋषि की घोषणा ही नहीं है, सम्पूर्ण योजना है-युग निर्माण योजना। इसका आधार उनकी प्रचण्ड साधना और प्रखर विचार हैं, जिनके आधार पर वे आज की डरी-सहमी मानवता के समक्ष फिर एक बार ‘यदा-यदा हि धर्मस्य .....’ वाला श्रीभगवान का संकल्प दोहरा रहे हैं। इस युग में भगवान राम और कृष्ण जैसा देवतुल्य जीवन जीकर लाखों-करोड़ों लोगों में नवजीवन का संचार करने वाले परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व का वास्तविक आकलन तो आने वाला समय ही करेगा, लेकिन यह सुनिश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विश्व मानवता को दिये गये उनके अनुदान ऋषि भगीरथ, वशिष्ठ और विश्वामित्र से कम नहीं हैं।

सच्चे ब्राह्मण-संत

जीवन के क्षण-क्षण व अपनी धन-सम्पत्ति का कण-कण का पूरी सादगी और संयम के साथ सदुपयोग करते हुए सच्चे ब्राह्मण का आदर्श प्रस्तुत करने वाले परम पूज्य गुरुदेव का जीवन मानवमात्र के लिए अनुकरणीय है। उनकी सादगी, सज्जनता, करुणा, प्रेम से प्रभावित हुए बिना कोई नहीं रहा। उनका जीवन पूरी तरह लोकमंगल के लिए समर्पित रहा। वे कहते थे, ‘‘इन दिनों जो कुछ चमत्कार नज़र आता है वह मेरे ब्राह्मण जीवन का ही प्रतिफल है। साधना से मिली सिद्धियों का प्रयोग तो युग परिवर्तन जैसे बड़े कार्यों के लिए किया जाना है।

गायत्री और यज्ञ

गायत्री प्राणदायिनी है। दुर्भाग्य से देश की गुलामी के अंधकार युग में उसे जपने का अधिकार वर्ग विशेष तक ही सीमित कर दिया गया था। परम पूज्य गुरुदेव के भागीरथी तप का ही प्रभाव है कि अब गायत्री घर-घर, जन-जन तक पहुँच रही है। .... ने कहा था, ‘‘अगर आचार्य जी न आते तो गायत्री विलुप्त हो जाती।’’ आज गायत्री उपासना और यज्ञ से देश-विदेश के करोड़ों लोग अनुप्राणित हो रहे हैं। उनके जीवन में पवित्रता, प्रखरता का संचार हो रहा है। वे युगऋषि के समाज के नवनिर्माण के संकल्प में साझेदारी करते हुए लोकमंगल के पथ पर कदम बढ़ा चुके या इसके लिए उत्साहित हैं।

साहित्य संजीवनी

आचार्य जी ने जीवन के उत्थान के लिए आवश्यक और समाज की हर समस्या पर अपने साहित्य से समाज का पथ प्रशस्त किया है। उन्होंने 3200 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जो युगों-युगों तक मानवता का पथ प्रदर्शन करती रहेंगी। वे कहते थे, ‘‘मैं लेखक नहीं हूँ। मेरे विचार क्रांति के बीज हैं। इन्हें जन-जन तक, घर-घर तक पहुँचा दीजिए। ये विचार अगले दिनों धमाका करेंगे।’’

उन्होंने कहा, ‘‘मैं युग की समस्याओं का चिंतन करता हूँ और सूक्ष्म जगत से जो समाधान मिलते हैं, उन्हीं को लिपिबद्ध कर देता हूँ।

विराट देव परिवार

गायत्री परिवार उन लाखों-करोड़ों देवात्माओं का विराट संगठन है, जिन्हें परम पूज्य गुरुदेव एवं उनकी सहधर्मिणी परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा, जिन्हें सभी श्रद्धापूर्वक वंदनीया माता जी ही कहते हैं, ने अपने प्रेम और संरक्षण से एक सूत्र में जोड़ा है। यह वह परिवार है जिसमें अपनी आराध्य सत्ता के प्रति अटूट श्रद्धा है। गायत्री परिवार को सेठ-साहूकारों के बड़े अनुदानों ने नहीं, इन्हीं रींछ-वानरों, ग्वाल-बालों के छोटे-छोटे अनुदानों ने सींचा है, जो यज्ञभाव के साथ अपने समय, श्रम, साधन, प्रतिभा को लोकमंगल के लिए समर्पित कर रहे हैं।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद

भारत की सनातन परम्पराओं में घुस पड़े अंधविश्वास और मूढ़मान्यताओं-कुरीतियों के प्रभाव से दुनिया के लोग धर्म को अफीम की गोली कहने लगे थे। परम पूज्य गुरुदेव ने धर्म के शाश्वत सूत्रों को आजीवन अपने जीवन की प्रयोगशाला में सिद्ध किया और धर्म के उस शुद्ध स्वरूप का प्रतिपादन किया जो सर्वमान्य है, विज्ञान सम्मत है, समाज के लिए उपयोगी है।

गायत्री परिवार का ध्येय ही धर्मतंत्र से अंधविश्वास, कुरीतियाँ, मूढ़मान्यताओं को समाप्त कर समाज में छाये घोर अनास्था संकट को दूर करना है। यह कार्य गायत्री, अर्थात् विवेक बुद्धि प्रदान करने वाली प्राणविद्या और यज्ञ अर्थात् लोकमंगल की भावना से ही संभव हो सकता है।

गुरुदेव के अद्वितीय पुरुषार्थ की कुछ और बातें

- 24-24 लाख के चौबीस गायत्री महापुरश्चरण 24 वर्ष में किए। इन 24 वर्षों में मात्र गाय के दूध की छाछ और गाय को जौ खिलाने के बाद उसके गोबर से निकले जौ से बनी एक रोटी का सेवन किया। उल्लेखनीय है कि वे अपनी उपासना सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त कर लेते और दिनभर लोकमंगल के कामों में समर्पित रहते थे।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी। आगरा जिले में ‘श्रीराम मत्त’ के नाम से विख्यात अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी। छः बार 6-6 माह का कठोर कारावास भी हुआ।
- हिमालयवासी 700 वर्षीय सूक्ष्म शरीर धारी गुरुसत्ता स्वामी सर्वेश्वरानंद जी से साक्षात्कार हुआ। उन्होंने पूर्व जन्मों के दर्शन कराये। प.पू. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी इससे पूर्व कबीर दास, समर्थ गुरु रामदास एवं स्वामी रामकृष्ण परमहंस के रूप में जन्म ले चुके थे।
- चारों वेद, 18 पुराण, 108 उपनिषद्, सभी स्मृति, दर्शन आदि आर्ष ग्रंथों का भाष्य किया। उन्होंने 19वें प्रज्ञा पुराण (6 खण्ड में) की रचना की जो वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प.पू. गुरुदेव

परम पूज्य गुरुदेव का संदेश है

अखण्ड ज्योति

(मासिक पत्रिका)

परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना समाज में आत्मशक्तियों के प्रति विश्वास जगाने, आध्यात्मिक जीवन के प्रति आस्था बढ़ाने, सृजनात्मक आन्दोलनों को गति देते हुए सतयुगी समाज का निर्माण करने का एक विराट अभियान है। वे अपने लिखे विपुल साहित्य के अलावा सन् 1940 से ही मासिक पत्रिका ‘अखण्ड ज्योति’ के माध्यम से अपने अनुयायियों और अध्यात्म क्षेत्र में रुचि रखने वाले परिजनों का पथ प्रदर्शन-उत्साहवर्धन करते रहे हैं। आज भी वह क्रम अनवरत चल रहा है, लगभग 12 लाख लोग इसका लाभ ले रहे हैं।

अखण्ड ज्योति पत्रिका वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का प्रतिपादन करती है। यह पत्रिका अंग्रेजी, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, असमिया भाषाओं में भी प्रकाशित होती है। गुजराती में यह ‘युगशक्ति गायत्री’ के नाम से प्रकाशित होती है।

युग निर्माण योजना (मासिक)

अखण्ड ज्योति की तरह ही जनमानस में आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणाओं का संचार करने तथा समाज में स्वस्थ परंपराओं का विस्तार करने के लिए समर्पित है परम पूज्य गुरुदेव की एक और पाती मासिक पत्रिका ‘युग निर्माण योजना’। इसमें अध्यात्म के व्यावहारिक पक्ष को प्रमुखता से उकेरा जाता है। यह केवल हिन्दी भाषा में ही प्रकाशित होती है।

प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)

प्रज्ञा अभियान अखिल विश्व गायत्री परिवार के मुख्यालय शांतिकुंज से प्रकाशित समाचार पत्र है। इसमें युगऋषि के विचार, सामयिक सक्रियता के लिए मार्गदर्शन तथा देश-विदेश में गायत्री परिवार की गतिविधियों के समाचार होते हैं। **जिन्हें गायत्री परिवार से जुड़ना हो, उन्हें प्रज्ञा अभियान अवश्य पढ़ना चाहिए।** यह हिंदी के अलावा गुजराती और बंगला भाषा में भी प्रकाशित होता है। नियमित अंकों को देखने के लिए संपर्क करें - मो : **9258369413**

संपर्क सूत्र :

अखण्ड ज्योति (हिंदी, अंग्रेजी) के लिए :
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
फोन : 0565-2403940, 9927086291

युग निर्माण योजना (हिन्दी) तथा युगशक्ति गायत्री (गुजराती) के लिए संपर्क करें :-
गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
फोन : 0565-2530115, 9927086287

अखण्ड ज्योति (मराठी, ओडिया, तमिल, तेलुगु, कन्नड, असमिया) तथा प्रज्ञा अभियान (हिन्दी, गुजराती, बंगला) के लिए :
गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड)
फोन : 01334-260602, 9258369725

स्नेहसलिला शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

जैसे शिव और शक्ति अभिन्न हैं, सीताराम, राधेश्याम अभिन्न हैं, वैसे ही स्नेह सलिला शक्ति स्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की अभिन्न सत्ता ही थी। लौकिक रिश्ते में तो वे पूज्य गुरुदेव की सहधर्मिणी थीं, लेकिन गायत्री परिवार के करोड़ों शिष्य-साधकों की तरह स्वयं परम पूज्य गुरुदेव भी उन्हें माताजी ही कहा करते थे। स्वयं उन्हीं के शब्दों में-

‘‘माताजी ने प्रायः आधी शताब्दी हमारी ऐसी ही सेवा की, जैसे काया-छाया का अभिन्न सम्बन्ध कहा जाता है। उनकी काया में है तो हाड़-मांस ही, पर इसका कोई कण ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूट कर न भरी हो। ऐसा कोई नहीं जो उनके सम्पर्क में आया और निष्ठावान न हुआ हो।’’

परम वंदनीया माताजी पूज्य गुरुदेव की ही अभिन्न सत्ता थीं। जिन्हें उनका कुछ क्षण का ही सान्निध्य क्यों न मिला हो, वह माताजी के प्यार से भावविभोर हो गया।

वंदनीया माताजी ने आजीवन प्यार लुटाया, करोड़ों लोगों का विराट देव परिवार बनाया। उन्होंने समाज में उपेक्षित नारी में नया आत्मविश्वास जगाया, उन्हें सम्मान दिलाया। इसके अलावा जब-जब भी आवश्यकता पड़ी, सम्पूर्ण मिशन के सूत्र संचालन से लेकर मासिक अखण्ड ज्योति पत्रिका के संपादन तक का कार्य बड़ी कुशलता से सँभाला।

परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद उन्होंने गायत्री परिवार को जो गति प्रदान की, उसमें उनके विराट शक्ति स्वरूपा स्वरूप की झाँकी स्पष्ट दिखाई देती थी। उन्हीं के संरक्षण-मार्गदर्शन में अनेक प्रतिकूलताओं के बावजूद हरिद्वार में कुम्भ मेले के स्तर का विराट आयोजन हुआ। उन्हीं के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और सूक्ष्म संरक्षण में देश-विदेशों में अश्वमेधों की शृंखला चली, जिनमें एक-एक आयोजन में कई-कई लाख लोगों ने भाग लिया। महाप्रयाण से पूर्व .... अश्वमेध महायज्ञों में स्वयं वे उपस्थित रहीं।

परम वं. माता भगवती देवी शर्मा

परम वं. माताजी के शक्तिस्वरूपा रूप के दर्शन अश्वमेध यज्ञों में उमड़ा जन सैलाब

देव संस्कृति के निर्माता, यज्ञ पिता-गायत्री माता

सद्विवेक और परमार्थ परायण जीवन ही है थकी-हारी मानवता की समस्याओं का समाधान

'गायेन त्रायते इति गायत्री'

अर्थात्-जिसके गायन से प्राणों का ..... , वह गायत्री है।

गायत्री वेदमाता है, देवमाता है, विश्वमाता है। अर्थात् ब्रह्माण्ड में विद्यमान समस्त ज्ञान का, देवत्व का और इस सारी सृष्टि का उद्भव गायत्री से ही हुआ है।

गायत्री सर्वकामधुक् (सभी श्रेष्ठ कामनाओं को पूरा करने वाली) है।

दुनिया का सबसे छोटा धर्मशास्त्र

गायत्री की महिमा से समस्त आर्षग्रंथ भरे पड़े हैं। वस्तुतः दुनिया का सारा ज्ञान गायत्री के चौबीस अक्षरों का ही विस्तार है। इसीलिए इसे दुनिया का सबसे छोटा धर्मग्रंथ कहा जाता है।

गायत्री गुरुमंत्र है, अर्थात् गायत्री की उपासना करने वाले साधक के अंतःकरण में ज्ञान का प्रकाश बढ़ता ही जाता है। उस प्रकाश में भावी प्रगति के मार्ग खुलते जाते हैं, साधक की समस्याओं का समाधान स्वतः ही सूझने लगता है और तद्नुरूप सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त होने के योग भी स्वतः ही बनते देखे जाते हैं।

श्रीमद् भगवद्गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है-

गायत्री छन्दसामहम्। (अ.10.35)

अर्थात्-छन्दों में मैं गायत्री छन्द हूँ।

संलग्न स्तंभ (बाँयी ओर) में गायत्री की गौरव-गरिमा सिद्ध करने वाले कुछ उदाहरण दिए गये हैं। ऐसी उक्तियों से आर्षग्रंथ भरे पड़े हैं। यहाँ छोटे से आलेख में गायत्री का तत्त्वदर्शन समझाना कठिन है, केवल यह महत्ता बताने का प्रयास किया जा रहा है कि जीवन के उत्कर्ष के लिए गायत्री उपासना कितनी महत्त्वपूर्ण है।

जब भारत में सभी गायत्री उपासना करते थे, तब भारत जगद्गुरु था, सारे विश्व का मार्गदर्शक था। जब से इसे प्रतिबंधित कर वर्ग विशेष तक सीमित कर दिया गया, इस राष्ट्र के पतन-पराभव का क्रम आरंभ हो गया। अब जब हमें अपनी खोई हुई सामर्थ्य को पुनः अर्जित करना है तो उसका आधार गायत्री ही होगी।

गायत्री महामंत्र की चमत्कारिक सामर्थ्य

गायत्री उपासना से आत्मबल बढ़ता है और सद्बुद्धि का विकास होता है। यह गायत्री महामंत्र का ही प्रभाव है। गायत्री मंत्र दुनिया का सबसे प्रभावशाली मंत्र है, इसे अब अपने प्रयोग-परीक्षणों के आधार पर वैज्ञानिक भी स्वीकार कर रहे हैं।

पिछली सदी के आठवें दशक में सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका 'ब्लिट्ज' के सम्पादक श्री आर.के. करंजिया से किसी पत्रकार ने पूछा कि दुनिया के परमाणु अस्त्रों का सामना करने के लिए भारत के पास क्या है? उनका जवाब था, ''भारत

वेदमाता गायत्री

गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

उस प्राण स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, दुःख नाशक, सुख स्वरूप, पापनाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

के पास गायत्री महामंत्र की शक्ति है। यदि देश के सभी नागरिक एक साथ एक ही समय में गायत्री महामंत्र का उच्चारण करें तो हम दुनिया की बड़ी से बड़ी ताकत को चुनौती दे सकते हैं।''

आज विज्ञान भी अपनी प्रयोगशालाओं में गायत्री महामंत्र की अकूत सामर्थ्य को स्वीकार कर रहा है, जबकि उसका वास्तविक प्रभाव तो यंत्रों की पकड़ से अनेकों गुना अधिक है।

गायत्री का प्रभाव

गायत्री मंत्र परमात्मा से की गई सद्बुद्धि की प्रार्थना है। इसका उच्चारण शरीर के सभी ऊर्जा केन्द्रों-चक्र-उपत्यिकाओं को स्पंदित कर उन्हें जाग्रत् करता है, जिससे आत्मशक्ति का जागरण होता है।

सरल भाषा में समझना हो तो इसे जनरेटर की तरह समझा जा सकता है। जनरेटर चालू होते ही प्रकाश और ऊर्जा का संचार होने लगता है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र के जप से शरीर में आत्मबल की वृद्धि होती है। आत्मबल बढ़ता है तो मन और विचारों में पवित्रता-प्रखरता बढ़ती है। तब व्यक्ति में लोभ, मोह, भय, हताशा, निराशा की बेड़ियों को तोड़कर आदर्शों को अपनाने और अवांछनीयताओं को ठुकराने का साहस बढ़ता जाता है।

गायत्री मंत्र जप का अपना ही प्रभाव है, लेकिन जब उसे उसके भाव के साथ जपा जाता है तो उसकी सामर्थ्य कई गुना अधिक हो जाती है।

सद्बुद्धि दात्री गायत्री

आज संसार में अज्ञान, अभाव, अशक्ति है तो संसाधनों की कमी से नहीं, मानवीय दुबुद्धि के कारण ही है। उसी के कारण धन व्यसन में, शक्ति उत्पीड़न में, बुद्धि कुचक्र रचने में लगी है। गायत्री के उपासक में मंत्र में निहित भाव के अनुरूप सद्बुद्धि का विकास होता है। परिणाम स्वरूप वह सन्मार्ग पर चल पड़ता है। स्वयं शांति और

मानवमात्र के लिए उपास्य है गायत्री

गायत्री किसी धर्म-सम्प्रदाय की नहीं है, यह मानवमात्र के लिए उपास्य है। यदि हर धर्म-वर्ग के लोग गायत्री उपासना करने लगें तो धर्म-वर्ग के नाम पर दुनिया में चल रहे लड़ाई-झगड़े ही समाप्त हो जायें, क्योंकि हर धर्म मानवता का ही पाठ तो पढ़ाता है। आज का दुर्बुद्धिग्रस्त इंसान उसे ठीक से समझ नहीं पा रहा। गायत्री उपासना का सामूहिक प्रभाव जन-जन में सद्बुद्धि जगाकर विश्व में शांति और प्रगति का पथ प्रशस्त करेगा।

आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है और अपने समाज को भी सुख-शांति की ओर ले जाता है।

आज समाज को इसी की जरूरत है। गायत्री में ही विश्व की सारी समस्याओं का समाधान निहित है। गायत्री देव संस्कृति की जननी है, माता है, जो अपने हर बालक को प्यार और दुलार के साथ उज्ज्वल भविष्य के पथ पर अग्रसर करती है।

यज्ञ

एक संस्कृति, जीवन जीने की कला

इस ब्रह्माण्ड का जन्म गायत्री महाशक्ति की स्फुरणा से हुआ, तो वहीं इसका पालन एक संस्कृति-देव संस्कृति के अनुशासन से हो रहा है। इस स्वचालित अनुशासन का नाम है यज्ञ। इसीलिए कहा जाता है 'देव संस्कृति के निर्माता, यज्ञ पिता-गायत्री माता'।

यज्ञ जीवन जीने की कला है। यज्ञ का अर्थ है परमार्थपरायणता, सर्वे भवंतु सुखिनः की भावना और कामना के साथ अपने भाव, विचार और कर्मों को समष्टिगत हित के लिए समर्पित कर देना। चाहे व्यक्ति हो, समाज हो या प्रकृति; जहाँ यज्ञभाव है, वहीं सुख-शांति है, प्रेम है, आनन्द है।

हमारे समाज में जिस यज्ञ (हवन) का प्रचलन है, वह इसी यज्ञभाव को सीखने, समझने और अपनाने की साधना है। यज्ञीय जीवन ही सार्थक है। यज्ञ से ही व्यक्ति महान बनता है और समाज सुखी रह सकता है।

सारी सृष्टि यज्ञ कर रही है। सूर्य दुनिया के लिए निरंतर तपता है। सागर अपना जल बादलों को देते हैं। वे बादल यज्ञभाव के साथ उसे धरती पर बरसाकर धरती की तपन को शीतलता प्रदान करते हैं, धरती माता को सींचते हैं। हिमालय निरंतर पिघल-पिघलकर धरती की प्यास बुझाने के लिए जलराशि नदियों को देता है। नदियाँ अहर्निश प्रवाहित होती रहती हैं। धरती माता अन्न उपजाती रहती है।

जहाँ यज्ञ होता है, अर्थात् स्वयं संग्रह न कर अपने संसाधनों को लोकमंगल के लिए समर्पित कर देने की परम्परा चलती रहती है, वहाँ कभी कमी नहीं पड़ती। सागर कभी सूखता नहीं, बादल बनते ही रहते हैं। नदियों को अथाह जलराशि अनवरत मिलती रहती है। धरती माता हर बार नई फसल देती है। पेड़ फल देते हैं तो फिर नये फल आ जाते हैं।

दूसरी ओर जो अपने ही पास रखते हैं, वे घाटे में रहते हैं। तालाब का जल बहता नहीं, इसलिए कीचड़युक्त हो जाता है। पेड़ पर लगे फल टूटें नहीं तो सड़ जाते हैं। जहाँ फसल नहीं होती वह जमीन बंजर हो जाती है।

जीवन का भी यही हाल है। अत्यधिक संग्रह किया हुआ धन-संसाधन तरह-तरह की विपत्तियाँ ही पैदा करता है। और अधिक संग्रह की चाह जीवन को कोल्हू का बैल बना देती है। उसे सुरक्षित रखने की व्यवस्था में ही सारा समय बीतता है। समाज की कष्ट-कठिनाइयों का कारण यह संग्रह वृत्ति ही है।

आइये! हम अपना दृष्टिकोण और अपनी जीवन शैली बदलें। यज्ञभाव के साथ जीवन जियें, सबकी सुख-शांति का आधार बनें।

जब सारी प्रकृति यज्ञ कर रही है तो इंसान ही क्यों पीछे है? वह तो सर्वशक्तिमान है। उसके पास भगवान का दिया सर्वोत्तम अनुदान है। यदि वह ईश्वरीय इच्छा और प्रकृति के अनुशासन में सादगी के साथ श्रमशील, विवेकयुक्त जीवन जीना सीख ले तो कमी कहीं नहीं रहेगी। यही यज्ञभाव है।

प्राणवान युगतीर्थ

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

शांतिकुंज में स्थापित युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा'

इस युग की ज्ञान गंगोत्री, जो विश्व के करोड़ों लोगों में निरंतर नवचेतना का संचार कर रही है।

तीन उद्देश्य

1. व्यक्तित्व परिष्कार के लिए साधना
2. लोकमंगल के लिए समर्पित युग सैनिकों का प्रशिक्षण
3. संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन

प्रमुख ध्यानाकर्षण

1. 5 से 10 हजार साधक-लोकसेवियों की निरंतर उपस्थिति
2. पारिवारिक व्यवस्थाएँ : भोजन-आवास, प्रशिक्षण, संस्कार आदि का कोई शुल्क नहीं।
3. लाखों-करोड़ों साधक हैं इस विराट देव परिवार के सदस्य, जिनके स्वैच्छिक अनुदान, अंशदान, समयदान और श्रमदान से और स्वानुशासन से चलती हैं सारी व्यवस्थाएँ

प्रतिदिन लगभग एक करोड़ गायत्री महामंत्र जप

• शांतिकुंज प.पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के भागीरथी तप से अनुप्राणित एक जीवंत-जाग्रत् तीर्थ है। यहाँ उपस्थित साधकों द्वारा प्रतिदिन लगभग एक करोड़ गायत्री महामंत्र का जप और यज्ञ होता है।

एक ही लक्ष्य - परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्

• यहाँ साधना करने वाले और प्रशिक्षण लेने वाले सभी साधक परमात्मा के युगों-युगों से चले आ रहे संकल्प 'परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्' से जुड़े हैं। सबका एक ही लक्ष्य है-पीड़ित, पतित, हताश, निराश मानवता में नवजीवन का संचार और समाज की गली-सड़ी मान्यताओं व परम्पराओं को समाप्त कर उन्हें प्रगतिशील आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।

अलौकिक दिव्यता की सतत अनुभूति

• यह परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के तप और प्रेम की डोर से बने विराट देव परिवार के लाखों-करोड़ों साधकों का अपना घर, अपना गुरुद्वारा है। एक ही उद्देश्य और लक्ष्य के लिए समर्पित साधकों के अंतर्मन की उमंग और ऊर्जा, सभी के स्वानुशासन से स्थापित युगतीर्थ की पवित्रता, स्वच्छता, शालीनता प्रत्येक को अलौकिक दिव्यता की सतत अनुभूति कराती रहती है।

लोकसेवियों का सतत प्रशिक्षण

शांतिकुंज की स्थापना धर्म चेतना का जागरण और विस्तार करने वाली दिव्य आत्माओं को तलाशने, तराशने और उनमें नई उमंगों का संचारने के उद्देश्य से हुई है। तद्नुरूप यहाँ प्रशिक्षण के विविध सत्र निरंतर चलते रहते हैं।

• **9 दिवसीय संजीवननी साधना सत्र :** प्रत्येक माह की 1 से 9, 11 से 19 तथा 21 से 29 तक की तारीखों में।

• **एक मासीय लोकसेवी प्रशिक्षण सत्र :** प्रत्येक माह की 1 से 29 तक की तारीखों में।

• इनके अलावा त्रैमासिक संगीत सत्र, जीवन प्रबंधन सत्र, आपदा प्रबंधन सत्र, नारी जागरण सत्र, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी सत्र तथा विविध रचनात्मक आन्दोलनों को गति देने के लिए आयोजित कई प्रकार के सत्रों के लिए अलग-अलग तिथियाँ निर्धारित हैं।

• सभी संस्कार आदर्श परंपराओं से निःशुल्क कराये जाते हैं।

• 1 से 3 दिन तक तीर्थ सेवन के लिए कभी भी आया जा सकता है। उपरोक्त उद्देश्यों के लिए आने के इच्छुक परिजनों को पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। विस्तृत जानकारी इंटरनेट पर भी उपलब्ध है।

अधिक जानकारी एवं पूर्व अनुमति लेने के लिए संपर्क करें :-
शिविर विभाग, शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड)-249411
फोन : 9258369749 ई-मेल : shivir@awgp.org
ऑनलाइन : http://awgp.org/social_initiative/shivir

देव संस्कृति के उत्थान के लिए समर्पित अखिल विश्व गायत्री परिवार

वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक क्रांति के लिए समर्पित लाखों देवात्माओं का विराट संगठन

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल दीदी

पावन गुरुसत्ता के पदचिह्नों पर चलते हुए मिशन को गति दे रहे हैं
स्नेह सलिला शैल दीदी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

सन् 1994 में परम वंदनीया माताजी के महाप्रयाण के बाद इस विराट देव परिवार के पथ प्रदर्शन की जिम्मेदारी शांतिकुंज के जिन वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के पास आई, इन दिनों उसका नेतृत्व स्नेहसलिला शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी कर रहे हैं। कार्य आसान नहीं था। इस मिशन को गुरुदेव-माताजी ने जिस त्याग, प्रेम, समर्पण, उदारता, सहिष्णुता, सम्मान और सहकार के उदात्त आदर्शों के साथ सींचा था, उन्हीं के द्वारा इस महान उत्तरदायित्व को सँभाला जा सकता था। श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब न केवल इस कार्य को बखूबी सँभाल रहे हैं, बल्कि मिशन को नित नई ऊँचाइयाँ भी प्रदान कर रहे हैं।

श्रद्धेया शैल जीजी तो गुरुदेव-माताजी की बेटी हैं। उन्हें तो गुरुदेव-माताजी ने बचपन से ही गढ़कर ममता, करुणा की जीती-जागती प्रतिमा बनाया है। इसीलिए तो उनके प्रेम के दो बोल सुनकर सुलगते हृदय में शीतलता का संचार हो जाता है। उनकी श्रद्धासिक्त वाणी कार्यकर्त्ताओं में नये जोश और उल्लास का संचार कर देती है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी अपने समर्पण, अपनी साधना और त्याग भावना के बल पर लाखों युवाओं की एक नई पीढ़ी गढ़ रहे हैं। वे उनके आदर्श हैं। वे गोल्ड मैडलिस्ट डॉक्टर (एम.डी.) हैं, लेकिन गुरुदेव के आह्वान पर विदेशी नौकरी का लालच तथा ऐशोआराम की जिंदगी छोड़कर पूरी तरह लोकमंगल के लिए समर्पित हो गये। उनके कुशल नेतृत्व और अथक परिश्रम के आधार पर मिशन ने कई गुना प्रगति की है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

- 12 वर्षों तक परम पूज्य गुरुदेव का निकटतम सान्निध्य मिला। उन्हीं ने तराशा और गढ़ा।
- मासिक अखण्ड ज्योति पत्रिका के संपादक-लेखक।
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति।
- वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा के लिए ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के निदेशक रहते हुए शोधकार्य किये।
- लगभग 80 देशों की प्रव्रज्या, युग चेतना का विस्तार किया।
- इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ लॉर्ड्स एवं हाउस ऑफ कॉमन में ऐतिहासिक उद्बोधन।
- स्पेस सेण्टर नासा द्वारा 'भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक प्रतिपादक एवं सुधारक' के रूप में सम्मानित।
- देश-विदेश के अनेकों राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों द्वारा सम्मानित।

पंचतीर्थ, प्रमुख स्थापनाएँ

जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा (उ.प्र.)

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा (उ.प्र.)

गायत्री तपोभूति, मथुरा (उ.प्र.)

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गायत्री चेतना केन्द्र, मनुस्यारी (उत्तरा.)

युगतीर्थ शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड)
यह अखिल विश्व गायत्री परिवार का मुख्यालय है। यहाँ साधना, प्रशिक्षण, संस्कारों का अनवरत क्रम चलता है(देखें पृष्ठ 5)। यहीं से अखिल विश्व गायत्री परिवार के विश्वव्यापी केन्द्र, शाखाओं का संचालन-मार्गदर्शन होता है।

जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा (उत्तर प्रदेश)
आगरा-जलेसर रोड़ पर स्थित ग्राम आँवलखेड़ा परम पूज्य गुरुदेव की जन्मभूमि है। सन 19.. तक यहीं रहकर उन्होंने साधना पुरश्चरण किये, स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। इन दिनों इसे आदर्श ग्राम विकास के केन्द्र और देश के प्रमुख पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

अखड ज्योति संस्थान, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
सन् 19... से लेकर 19.. तक यह परम पूज्य गुरुदेव की साधना स्थली रही। यही से अखण्ड ज्योति का प्रकाशन और विपुल साहित्य की संरचना उन्होंने की।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री परिवार के संगठन का शुभारंभ यहीं से किया। वे सन् 1971 तक तपोभूमि से ही मिशन की गतिविधियों का संचालन करते रहे। यह आज भी गायत्री परिवार के साहित्य प्रकाशन का प्रमुख केन्द्र है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार (उत्तराखंड)
परम पूज्य गुरुदेव ने इसकी स्थापना प्रथम शक्तिपीठ के रूप में की। यह अध्यात्म के वैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोध केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखंड)
आधुनिक शिक्षा के साथ विद्यार्थियों आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं समग्र विकास के लिए संकल्पित विश्व का यह अद्वितीय विश्वविद्यालय है। 16 वर्ष के छोटे से कार्यकाल में विश्व के कई देशों के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों-शिक्षण संस्थानों के साथ शैक्षिक शोध एवं सहयोग के लिए संबंध स्थापित हुए हैं। यहाँ के स्नातक अनेक देशों में सेवा करते हुए नवसृजन अभियान को गति दे रहे हैं।

गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)
देवात्मा हिमालय के उत्तुंग शिखर पर नव प्रतिष्ठित यह शक्तिपीठ गायत्री साधकों को अलौकिक दिव्यता की अनुभूति कराता है। यहाँ से पंचाचूली के हिमाच्छादित शिखरों के दर्शन होते हैं। इस चेतना केन्द्र का संचालन शांतिकुंज, हरिद्वार से होता है। वहीं से अनुमति प्राप्त साधकों को मुनस्यारी साधना के लिए भेजा जाता है।

4500 शक्तिपीठें, 62 हजार शाखाएँ

80 देशों में हैं गायत्री परिवार के केन्द्र और शाखाएँ
5 लाख लोग जुड़े हैं

अखिल विश्व गायत्री परिवार के नवसृजन अभियान को गतिशील करने के लिए पूरे देश और विदेशों में गायत्री चेतना केन्द्र, शक्तिपीठें, प्रज्ञापीठें स्थापित हैं। भारत में लगभग 4500 शक्तिपीठें और 62 हजार प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल आदि विविध प्रचारात्मक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से युगऋषि के संदेश को घर-घर पहुँचा रहे हैं। गायत्री चेतना केन्द्र और शक्तिपीठों पर साधना, प्रशिक्षण, संस्कार, स्वावलम्बन, कुरीति उन्मूलन जैसे कार्यक्रम नियमित रूप से चल रहे हैं।

गायत्री परिवार द्वारा संचालित विभिन्न आन्दोलन

महत्ता और आवश्कता समझें, सहयोगी बनें

साधना : युग तभी बदलेगा, जब मानव में देवत्व जगेगा। व्यक्ति को आंतरिक और सामाजिक बुराइयों से लड़ने तथा आदर्शों को अपनाने के लिए आत्मबल और विवेक की दृष्टि चाहिए। यह गायत्री उपासना एवं जीवन साधना से संभव है। गायत्री परिवार के सदस्यों द्वारा न केवल व्यक्तिगत साधना की जा रही है, बल्कि सामूहिक जप एवं मंत्र लेखन साधना अुनष्ठान भी चलाये जा रहे हैं।

गायत्री साधना का उद्देश्य आसुरी शक्तियों को परास्त करने के लिए माँ दुर्गा की तरह संघशक्ति का सृजन करना तथा सूक्ष्म जगत में व्याप्त विषाक्तता का शमन करना भी है। गायत्री साधना लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर उन्हें सृजनात्मक कार्यों में प्रवृत्त करती है।

शिक्षा : पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज किताबी ज्ञान प्राप्त करने एवं डिग्री हासिल करने को ही शिक्षा मान लिया गया है। वास्तविक शिक्षा तो अकूत सामर्थ्यवान जीवन के रहस्यों जानने, सुप्त शक्तियों को जगाने तथा आदर्शों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है, जिसका अभ्यास प्राचीन गुरुकुलों में कराया जाता था। पुस्तकों के अध्ययन से विद्वान पूर्वजों और नयी-नयी शोधों का लाभ मिलता है।

गायत्री परिवार संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन, नैतिक शिक्षा के समानान्तर क्रम, बाल संस्कार शाला, प्रौढ़ शिक्षा जैसे माध्यम से इस दिशा में अपना भरपूर योगदान दे रहा है। वर्तमान शिक्षण संस्थानों की परम्परा में देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा के संयोग से विद्यार्थियों के समग्र और सही विकास का अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत कर रहा है।

स्वास्थ्य : भौतिक सोच वाली आज की जीवन शैली मानवीय स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है। गायत्री परिवार अपने स्वास्थ्य आन्दोलन के अंतर्गत लोगों को प्रकृति के अनुरूप तथा संयमित जीवन जीने, आयुर्वेद से स्वास्थ्य रक्षा करने, योगाभ्यास से शारीरिक-मानसिक संतुलन स्थापित करने व शक्ति संवर्धन करने के लिए प्रशिक्षण एवं अभ्यास कराता है।

स्वावलम्बन : बेरोजगारी और मुनाफाखोरी आज की बहुत बड़ी समस्या है। यदि अपने क्षेत्र के कच्चे सामान के प्रसंस्करण का अभियान चल पड़े और लोग उन्हीं का सेवन करने लगें तो ये दोनों का समाधान संभव है। गायत्री परिवार लोगों को अनेक प्रकार के कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा कर रहा है।

नारी जागरण : हमारे समाज के पतन का एक बड़ा कारण मातृशक्ति की उपेक्षा-अवहेलना भी रहा है। पहले नारी घर की चाहरदीवारी में कैद थी, आज वह विकास तो कर रही है, लेकिन उसके कदम भौतिकता की चकाचौंध में भटक रहे हैं। यदि नारी शालीन, संस्कारवान होगी तो वह अपने घर को स्वर्ग बना लेगी। तब बच्चे भी उच्छृंखल और उद्दण्ड नहीं, सभ्य और संस्कारवान होते चले जायेंगे।

गायत्री परिवार के नारी जागरण अभियान के प्रभाव से देश की लाखों देवियों ने सेवा, साधना और लोकमंगल की दिशा में कदम बढ़ाते हुए अपने घर-परिवार का वातावरण ही बदल दिया है।

पर्यावरण संरक्षण : पर्यावरण प्रदूषण आज मानव ही नहीं, प्राणिमात्र के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा संकट बनकर खड़ा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने इस संकट के निवारण के लिए वृक्षारोपण, जल स्त्रोतों की सफाई, संरक्षण, ग्राम-नगरों में सफाई जैसे अनेक कार्य बृहद् स्तर पर किए हैं।

व्यसन-कुरीति उन्मूलन : आज कमाने और पाने से ज्यादा आवश्यकता सँभलने और बचाने की है। इंसान सब कुछ समझते हुए भी न जाने क्यों आत्मघाती कदम उठाने पर उतारू दिखाई देता है। नशे ने स्वास्थ्य, परिवार की सुख-शांति, बच्चों का जीवन सब कुछ बर्बाद कर रखा है, लेकिन व्यक्ति है कि मानता ही नहीं।

इसी प्रकार समाज में मृतक भोज, दहेज-दिखावा, बलिप्रथा, फैशन, तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका जैसी अनेक कुरीतियाँ विद्यामान हैं। गायत्री परिवार ने इन सबके विरुद्ध सशक्त आन्दोलन चला रखा है। इस परिवार से जुड़े लोग स्वयं इन्हें अपनाकर अपना आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं।

गर्भ संस्कार महोत्सव : समाज के हर वर्ग में अपने बच्चों को संस्कारवान बनाने के प्रति जागरूकता बढ़ी है। गायत्री परिवार ने इसके लिए एक बृहद् अभियान चलाया है। इसके माध्यम से गर्भिणी बहिनों का गर्भ संस्कार (पुंसवन संस्कार) कराया जाता है और बच्चे के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, बौद्धिक एवं वैचारिक स्वास्थ्य के लिए अपनाये जाने योग्य सूत्र गर्भिणी और उसके परिवारी जनों को बताये जाते हैं।

इस अभियान के प्रति डॉक्टरों और सरकारी प्रतिष्ठानों में विशेष जागरूकता आ रही है। उनकी कार्यशालाएँ आयोजित कर गर्भस्थ शिशु पर गर्भिणी के आहार, विचार, व्यवहार के प्रभावों की जानकारी वैज्ञानिक तथ्यों के साथ दी जाती है।

विचार क्रांति अभियान : अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रमुख अभियान है विचार क्रांति अभियान। व्यक्ति की सोच बदल जाये तो उसकी समस्याएँ स्वतः हल हो जायेंगी, जीवन बदल जायेगा। इसके लिए झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, पुस्तक मेले तथा मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से युगऋषि के क्रांतिकारी विचारों को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाया जा रहा है और उसका शानदार प्रभाव भी लोगों पर पड़ रहा है।

देव संस्कृति की सुनो पुकार, संस्कृति-सामाज का करो उद्धार

ईश्वर भी केवल उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।

माँ गंगे की करुण पुकार

हे धर्मशील भक्तो! ऋषि परम्परा फिर दोहराओ, इस युग के भस्मासुरों से मुझे बचाओ

माँ गंगा सामान्य नदी नहीं, इस देश की जीवन धारा है। इसमें केवल जल ही प्रवाहित नहीं होता, युगों-युगों से संस्कृति और सभ्यता भी प्रवाहित हो रही है। यह हजारों वर्षों से यह भारत की आधी आबादी अन्न-जल ही नहीं दे रही, बल्कि पूरे विश्व में बसे देव संस्कृति के अनुयायियों के अंतःकरण में श्रद्धा, भक्ति, पवित्रता का संचार कर रही है।

न करने योग्य

- घर की कचरा युक्त पूजन सामग्री, बासी फूल गंगा में न डालें ।
- तट पर पॉलीथीन का प्रयोग न करें ।
- घाट पर नहाने एवं कपड़े धोने का साबुन प्रयोग न करें।
- गुटका एवं शेम्पू पाउच न फेंके ।
- तटों और घाटों पर मल-मूत्र का त्याग न करें ।
- प्लास्टर ऑफ पेरिस की बनी एवं जहरीले रंगों से रँगी प्रतिमाओं का विसर्जन न करें ।
- तटीय खेतों में रासायनिक खाद, कीटनाशक का प्रयोग न करें ।
- मल-मूत्र युक्त पानी गंगा में प्रवाहित न होने दें ।
- शहर का गंदा नाला एवं उद्योगों का गंदा-जहरीला पानी प्रवाहित होने से रोकें।
- प्लास्टिक के दोनों में दीपदान न करें।
- मृत पशु, शव, अधजले शव गंगा में प्रवाहित न करें।

करने योग्य

- घर की पूजन सामग्री, बासी फूल एवं अन्य सामग्री की खाद बनाएँ ।
- पॉलीथीन के स्थान पर कागज के बैग उपयोग करें ।
- मल-मूत्र त्याग हेतु शौचालयों का प्रयोग करें ।
- पर्यावरण अनुकूल मूर्तियों की ही स्थापना करें ।
- रासायनिक खाद, कीटनाशक के स्थान पर गोबर, केंचुआ खाद एवं गौमूत्र से बने कीटनाशक का प्रयोग करें ।
- गंदे पानी के सोक पिट (सोख्ता गड्ढा) बनाएँ।
- अच्छा हो आटे के दिये बनाकर घाट पर ही दीपदान करें, जल में न बहायें ।

आस्था के दो रूप | गंदगी की अनदेखी और पुण्यलाभ की चाह | माँ गंगा की सफाई करते गायत्री परिवार के परिजन

समझदार बनें, नशे को 'ना' कहें

प्रयागराज-2019 में गायत्री परिवार का वृहद् ज्ञानयज्ञ

युग परिवर्तन जैसे महान उद्देश्य से जुड़कर महाकाल के साथ साझेदारी करने के सौभाग्य का वरण करें

मेले में गायत्री परिवार की गतिविधियाँ

मेला परिसर में गायत्री परिवार के केन्द्रों को दर्शाता मानचित्र

हम ईश्वर के राजकुमार हैं

माँगने या मनुहार करने की अपेक्षा उसकी दी हुई अकूत सामर्थ्य को पहचानें, जगायें, विकसित करें, धन्य हो जायें

गोस्वामी तुलसी दास जी की रामचरित मानस में लिखी चौपाई **'बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथहि गावा।।'** हम सभी दोहराते हैं, प्रायः सभी संत समझाते हैं। इस तथ्य और सत्य को जानते हुए भी हम क्यों भगवान से कुछ पाने के लिए याचना व मनुहार करते रहते हैं। क्यों नहीं उस सौभाग्य को पहचानते और अवसर का लाभ उठाते?

विपत्ति में फँसा व्यक्ति जब ईश्वर से प्रार्थना करता है तो उसका औचित्य भी समझ में आता है और उसे भगवान से सहायता मिलती भी देखी जाती है, लेकिन सहजता से जीवन यापन करने वाले लोग भी जब अधिक धन-सम्पत्ति के लिए ईश्वर के सामने गिड़गिड़ाते हैं, उनसे पक्षपात की आशा रखते हैं, तो यह उनकी नासमझी ही है। सामान्य लोग ही नहीं, तथाकथित संत, महात्मा, ज्ञानी भी इस तरह के लालच देकर भक्तों को अपने जाल में फँसाते और दुकान चलाते दिखाई देते हैं।

भलाई इसी में है कि समझदारी अपनाई जाय। भगवान से मिली अकूत सामर्थ्य का मूल्य समझा जाय। उन्होंने मनुष्य को अन्य प्राणियों से अधिक सामर्थ्य प्रदान करते हुए आशा रखी थी कि वह सृष्टि संचालन में उसका सहयोगी बनेगा। स्वयं सुखी रहेगा और दूसरों के सुख का कारण बनेगा। लेकिन मानव अपनी दुर्बुद्धि के कारण स्वयं दुःखी है, हताश-निराश है। अच्छा हो हम मुफ्त में या कुछ दान-धर्म के बदले में बड़ी कामनाएँ करने के व्यामोह से उबरें, ईश्वरनिष्ठ जीवन जीते हुए विभिन्न आध्यात्मिक उपचारों के माध्यम से भगवान से माँगने के बजाय 'मानव में देवत्व जगाने' और 'धरती को स्वर्ग बनाने के लिए प्रयत्नशील हो।

चार सूत्र

व्यस्त रहो, मस्त रहो।
सलाह लो, सम्मान दो।
सुख बाँटो, दुःख बँटाओ।
अपनी रोटी
मिल-बाँटकर खाओ।

चार मंत्र

समझदारी, जिम्मेदारी,
ईमानदारी, बहादुरी

नवसृजन की ईश्वरीय योजना में साझेदारी के कुछ प्रभावशाली कार्यक्रम

मानव में देवत्व जगाओ, इस धरती को स्वर्ग बनाओ

नवयुग की संरचना के सर्वमान्य सूत्र
युग निर्माण सत्संकल्प
(नित्य दोहरायें, जीवन में अपनायें)

1. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
2. शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्म संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
3. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
4. इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
5. अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
6. मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
7. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
8. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
9. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
10. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
11. दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
12. नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
13. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान एवं पुरुषार्थ का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
14. परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
15. सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
16. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगें। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
17. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे तो युग अवश्य बदलेगा।
18. हम बदलेंगे, युग बदलेगा। हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा। इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

आस्तिक जीवन

जैसा कि प्रथम पृष्ठ के आलेख से स्पष्ट है कि हमें अपने सृजेता (ईश्वर) के प्रति कृतज्ञ एवं आस्थावान होने की साधना करनी चाहिए। इससे जीवन में अनुशासन सधता है, व्यक्तित्व विकास में बाधक अहंकार और उच्छृंखलता से बचने में बड़ी सहायता मिलती है। अनास्था ही इस युग का सबसे बड़ा संकट है, जिसने तमाम विग्रह एवं समस्याएँ खड़ी की हैं। आस्था हो, लेकिन अंधविश्वास नहीं। सत्प्रवृत्तियाँ अपनायें, कुरीतियों से दूर रहें।

उपासना

विशाल वृक्ष के सहारे एक निर्बल लता भी आकाश चूमने लगती है। उपासना का भाव भी यही है। ईश्वर केवल प्रतीक या प्रतिमा नहीं है, वह तो आदर्शों का समुच्चय है, जैसे-शिवजी का चंद्रमा मन-मस्तिष्क को शीतल बनाये रखने का, उनके मस्तक पर बहती गंगा पवित्रता और सद्विचारों की, गले के साँप समाज के हर वर्ग के साथ मैत्री और सामंजस्य का भाव रखने, अपने प्रेम भरे व्यवहार से उन्हें अपना सहयोगी बनाने का आदि...। अपने इष्ट के आदर्शों का स्मरण करते हुए ईश्वर की उपासना अवश्य करें।

साधना

अच्छी सेहत के लिए व्यायाम के सूत्र पढ़े और बताये तो जा सकते हैं, लेकिन स्वास्थ्य तो उनके नियमित अभ्यास से ही प्राप्त होता है। उसी प्रकार सद्गुणों को जीवन में धारण करने की साधना जरूरी है। बुराइयों को दूर करने की और अच्छाइयों को अपनाने की साधना जीवन में संकल्पपूर्वक हर क्षण होनी चाहिए।

सेवा

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा था, ''पीड़ित मानवता में ही भगवान बसता है।'' यह शिक्षा सभी देते हैं। उनकी सेवा कीजिए, केवल साधन उपलब्ध कराने का नहीं, उनके जीवन को ऊँचा उठाने का प्रयास कीजिए। सेवा मनुष्य में दया, प्रेम, उदारता जैसे सद्गुणों का विकास करती है। ईश्वर की प्राप्ति सही मायनों में इन्हीं गुणों के रूप में होती है।

स्वाध्याय-सत्संग

अपने जीवन लक्ष्य के सतत स्मरण के लिए अच्छे विचारों के सान्निध्य में रहना परम आवश्यक है। इसलिए अच्छी पुस्तकों के स्वाध्याय का नियमित क्रम बनायें। प.पू. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी जैसे लोकमंगल के लिए समर्पित अनेक महापुरुषों का साहित्य आपके मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध है। केवल पढ़ें ही नहीं, अच्छे सूत्रों का निरंतर चिंतन-मनन भी करें।

हम उन्हें ही अपना जीवन-आदर्श मानें, जैसे हम बनाना चाहते हैं। वैसे ही महापुरुषों के जीवन का अनुसरण करें।

समयदान-अंशदान

अपने समाज के उत्थान के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान और पुरुषार्थ का एक अंश समाज के लिए अवश्य लगाते रहना चाहिए। इसका पुण्यफल अनंत गुना होकर जीवन को अलौकिक सुख-शांति प्रदान करता है।

'सबके लिए सद्बुद्धि-सबके लिए उज्ज्वल भविष्य' के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रार्थना - गायत्री उपासना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका जीवन एक समुद्र की बूँद की तरह है, जो समाज में परस्पर सहयोग-समन्वय से ही रह सकता है। जैसे समुद्र की बूँद लहरों के ऊठने-गिरने के साथ उठती और गिरती हैं, उसी तरह हमारी स्थिति भी है। समाज दुःखी रहे, चारों तरफ हा-हाकार मची हो तो हम व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता, चाहे वह कितना भी सुविधा सम्पन्न क्यों न हो। अपना घर अत्यंत सुंदर हो और बाहर की गलियाँ गंदी हों, पास में ही दुर्गंधयुक्त तालाब हो तो क्या उसकी गंदगी प्रभावित नहीं करेगी? अतः मनुष्य को अपने उत्थान के प्रयास के साथ-साथ अपने समाज को उठाने में भी पूरा-पूरा सहयोग करते हुए अपनी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करना आवश्यक है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार ऐसे ही देवमानवों का विशाल परिवार है जो सारे विश्व में एक व्यापक परिवर्तन के लिए कार्य कर रहा है। इसमें हर व्यक्ति का साथ-सहयोग मिले, संगठित प्रयास हों तो परिस्थितियों को बदलते देर नहीं लगेगी।

कुछ व्यावहारिक पक्ष

आज की सारी समस्याएँ दुर्बुद्धि से ही उपजी हैं। अतः सभी गायत्री उपासना अवश्य करें, केवल स्वयं के लिए सद्बुद्धि पाने की कामना से नहीं, बल्कि **'सबके लिए सद्बुद्धि-सबके लिए उज्ज्वल भविष्य'** की प्रार्थना के साथ। गायत्री किसी धर्म विशेष की नहीं, सार्वभौम प्रार्थना है। इसे सभी अपनी व्यक्तिगत उपासना में गायत्री उपासना में जोड़ सकते हैं।

> अपने इष्टमंत्र या नाम जप के साथ गायत्री मंत्र का भाव को जोड़कर भी वही फल प्राप्त किया जा सकता है।

यदि फिर भी गायत्री मंत्र जप करने में संकोच हो तो मन में यह भाव रखें, ''हे परमात्मा! हम सबको सद्बुद्धि दें, उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर आगे बढ़ायें। और अपने किसी इष्ट मंत्र या नाम का जप करें। इससे भी गायत्री मंत्र जप जैसा पुण्य लाभ पाया जा सकता है।

सामूहिक प्रयास हों

समाज व्यापक परिवर्तन संगठित प्रयासों से ही होते हैं। अतः उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के सामूहिक कार्यक्रम भी हर जगह चलने चाहिए। सुविधानुसार सप्ताह में एक बार या देवस्थानों पर होने वाली पूजा-प्रार्थना के साथ इस क्रम को शामिल किया जा सकता है। इससे एक सभी के विचार और भाव बदलते जायेंगे, साथ ही यह प्रयास सूक्ष्म जगत के विषाक्त वातावरण को भी शुद्ध करने में बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे।

शांतिकुंज की इण्टरनेट सेवाएँ

मुख्य वेबसाइट
www.awgp.org
www.awgp.org/live
विविध जानकारियाँ, साहित्य, समाचार, शिविर के लिए आवेदन की सुविधा, फोटो, वीडियो, लाइव प्रसारण, लाइव दर्शन आदि

यू-ट्यूब
shantikunjvideo_Gayatri Pariwar पर पूज्य गुरुदेव-वं. माताजी सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं और कार्यक्रमों के video उपलब्ध है। इसे subscribe करने पर latest uploaded video की सूचना भी प्राप्त होती रहेगी।

फेसबुक
GayatriPariwaar या awgplive
शांतिकुंज में दैनिक यज्ञ, प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा, अखण्ड दीप, गायत्री मंदिर दर्शन) एवं देशभर में होने वाले प्रमुख कार्यक्रमों का प्रसारण।

ई-मेल
awgpemaillist@gmail.com
इस ई-मेल पर अपनी ई-मेल आई.डी. भेजिये। आपको विभिन्न कार्यक्रमों की वीडियो लिंक, मिशन की पत्रिकाएँ आदि नियमित रूप से भेजी जाती रहेंगी।

ब्लॉग
@awgpskj.blogpost.in
इस ब्लॉग पोस्ट पर पू.गुरुदेव के विचार नियमित रूप से पोस्ट किए जाते हैं। पढ़ें-पढ़ायें, जीवन को समुन्नत बनायें।

प्रज्ञा अभियान से नियमित रूप से जुड़िये

प्रज्ञा अभियान एक नियमित पाक्षिक (माह में दो बार) प्रकाशन है, जो अध्यात्म के विशुद्ध स्वरूप को अपनाने एवं लोकमंगल की गतिविधियों में सहयोगी बनने के इच्छुक व्यक्तियों का सतत मार्गदर्शन कर सकता है। अपने व्हॉट्सएप पर नियमित अंकों को देखने एवं जुड़ने के लिए मैसेज करें। **मोबाइल : 9258369413**

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in **एवं** news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.12.2018
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2018-20